गणित में प्रयोजना विधि एवं कार्य विधि -

- Project Method -

अन्य विषयों की भाँति गणित के क्षेत्र में भी प्रयोजना एक विशेष स्थान रखती है। अब प्रश्न उठता है कि प्रायोजना का क्या अभिप्राय है? किसी भी प्रयोजना में यदि प्रयोग आ जाये तो ऐसी प्रायोजना को प्रयोग प्रायोजना कहते हैं।

गणित शिक्षक प्रतिदिन कक्षा में छात्रों को भिन्न भिन्न प्रकार के प्रश्नों को हल करने की विधियों से अवगत कराता है, परन्तु स्वयं की विषय में प्रगति हेतु वह अधिक नहीं कर सकता है। इस प्रकार शिक्षक स्वयं कक्षा के छात्रों पर भिन्न-भिन्न कठिनाइयों को हल कर सकता है व भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयोग कर सकता है और उसके परिणामों के आधार पर अपनी शिक्षण कला में सुधार कर सकता है।

इस प्रकार शिक्षक अपनी कक्षा में अनुसन्धान कर सकता है और अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकता है। एक जिज्ञासु शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य में अनेक प्रकार की गणित सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यदि शिक्षक इन समस्याओं का हल प्रयोग द्वारा कर सके तो पद्धति को प्रयोग प्रायोजना कहा जाता है। इस प्रकार प्रयोग करने में शिक्षक पूर्ण रूप से स्वतन्त्र होता है और जिस समस्या को सम्मुख रखकर प्रयोग करता है वह स्वयं उसकी अपनी कठिनाई होती है। इस कार्य में शिक्षक क्रियाशील रहता है।

प्रयोजना के पद -

I- प्रस्तावना - इसके अन्तर्गत जिस समस्या पर कार्य का प्रयोग किया जाता है उसका संक्षिप्त विवरण लिखा जाता है।

II- शीर्षक - जिस समस्या पर प्रयोग किया जाता है उसको स्पष्ट तथा कम शब्दों में लिखा जाता है।

3- समस्या की व्याख्या - इसमें समस्या की व्याख्या रूप तथा वह कैसे शिक्षक के सम्मुख पैदा हुयी उसको संक्षिप्त रूप में लिखा जाता है।

16/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया